

## अजब है रूप और अजब तेरी हस्ती

अजब है रूप और अजब तेरी हस्ती,  
चढ़ी है भोले तेरे नाम वाली मस्ती ।  
मस्ती में झूमे जग सारा तेरे ही दीदार को,  
भव तार दो, भव तार दो, भव तार दो, भोले तार दो ॥

तीन लोक के तुम हो स्वामी, करदो कृपा अन्तर्यामी ।  
त्रिशूल धारि, हे त्रिपुरारी, भोले बाबा कर उपकारी ।  
उमरू बजाके शिव शंकर कर झन्कार दो ॥  
भव तार दो .भव तार दो...

तेरा जलवा जब है पाते गम के बादल छट छट जाते ।  
जटा में तेरी गंगा है साजे माथे चंदा नाग गले विराजे ।  
भंग का पी कर पियाला के मस्ती शुमार दो ॥  
भव तार दो. भव तार दो...

ओमकार की अद्भुत शक्ति, अर्ध नारेश्वर शिवा है शक्ति ।  
'दर्शन' गाये गाथा तिरिकल की भगत 'राज' लिखता यह पंक्ति ।  
भटक रहा हूँ भोले कब से, ये जीवन सवार दो ॥  
भव तार दो .भव तार दो...

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1592/title/ajab-hai-roop-aur-ajab-teri-hasti-bhav-taar-do>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |